उमेश रश्मि रोहतगी

आईआईटी खड़गपुर के ग्रेजुएट उमेश जी ने १९८२ में मिचिगन युनिवर्सिटी से मास्टर की डिग्री हासिल की, वहीं रश्मि जी ने १९७० में ग्वालियर से संस्कृत में एमए की उपाधि प्राप्त की. सामाजिक उत्थान के कार्यों में आपको जीवन की सर्वोच्च सार्थकता दिखाई देती है और यही कारण है कि गुजरे दस सालों में आपने हिंदुस्तान के ४०० से ज्यादा गाँवों का दौरा किया है. स्कूल, अस्पताल, सामुदायिक संस्थाओं के अलावा हर उस व्यक्ति-संस्था को मदद करने के लिए आप तत्पर रहते हैं जिन्हें सही मायनों में मदद की जरूरत होती है.

सम्पर्क : 24161, Nilan Drive Novi MI 48375. Email : rurohatgi@yahoo.com

संस्मरण

हमारी भारत यात्रा

हमारे बच्चे चाहते थे कि हम उनके साथ भारत की यात्रा करें। हमने हाँ कर दी। हमारी इस यात्रा में पाँच मंतव्य थे। पहला ऐतिहासिक जगहों को देखना, दूसरा तीर्थयात्रा, तीसरा दीवाली, दशहरा, रक्षाबन्धन आदि त्यौहार परिवारजनों के साथ मनाना, चौथा रिश्तेदारों मित्रों आदि से मिलना और पाँचवाँ कुछ सामाजिक सेवा कार्य।

हमने मेरठ को अपना गढ़ बनाया क्योंकि वहाँ हमारे अम्मा, पापाजी, भाई-भाभी, भतीजे-भतीजी रहते हैं। कुल मिलाकर हमने १४ छोटी बड़ी यात्राएँ वहाँ से शुरू करके वहीं समाप्त कीं। इन सब यात्राओं के बड़े ही सुखद व अनोखे अनुभव हुए और हमने ६ महीनों में १२० जगहों का भ्रमण किया। जो स्थान हमने देखे उनमें प्रमुख थे मुम्बई, गोआ, जयपुर, आगरा, मेरठ, दिल्ली, देहरादूर, मसूरी, ऋषिकेश, बनारस, इलाहाबाद, शिमला, रोहतांग पास, कुल्लू, मनाली, जम्मू, वैष्णोदेवी, चामुण्डा, ज्वालाजी, अजमेर, पुष्कर, इन्दौर, उज्जैन, बड़ौदा, खजुराहो, झांसी, ग्वालियर, अम्बाला, अमृतसर, बग्गा बार्डर, माउंट आबू, कोटा, बूंदी, सूरत, अहमदाबाद, मद्रास, कन्याकुमारी, रामेश्वरम, मदुराई, त्रिचनापल्ली, त्रिवेन्द्रम, कालीकट, अरनाकुलम, कलकत्ता, विजयवाड़ा, कमारपुकुर, वरिसिंग, पुरूलिया, दासपुर, पटना, राँची, नालन्दा, पावापुरी, विरायतन, सारनाथ, फैजाबाद, बंगलौर, मैसूर, हैदराबाद, नागपुर, भोपाल, उदयपुर, जोधपुर, भरतपुर, वर्ड सैंक्चुअरी, करीमनगर।

हमारी किसी भी यात्रा का एक साधन दूसरे से नहीं मिलता था। कभी हम प्राइवेट कार से सफर करते, कभी किराये की कार से, कभी ट्रेन से तो कभी बस से। अपने टिकिट भी खुद खरीद कर सीट बुक करते थे। अब भारत के बड़े-बड़े शहरों में यह सुविधा है कि कम्प्यूटर पर कहीं का भी रिजर्वेशन कहीं भी करवा सकते हैं। आम लोगों के बीच रेल में सफर करने का भारत में अलग ही मजा है।

ज्यादातर जगहों पर हमारे दोस्त, रिश्तेदार, सहकर्मी रहते थे। हमने कुल मिलाकर १० जगहों पर होटल आदि का इस्तेमाल

किया रहने के लिए। यू.पी. टूरिज्म और हिमाचल टूरिस्ट लॉज बहुत अच्छे हैं, जहाँ खाना ताजा और साफ-सुथरे तरीके से मिल जाता था, लेकिन हम अपने साथ भुने हुए चने और मूँगफली हमेशा ही रखते थे। फलों के साथ ज्यादा प्यार करते थे। बाजार की खाने-पीने की चीजों का इस्तेमाल करने से पहले हमने इस बात का हमेशा ही ध्यान रखा कि वे ताजी हों। फिर चाहे वह सड़क किनारे ढाबों में ही क्यों न बना हो। ढाबों में मिलने वाली तन्दूरी रोटी हमें बहुत भायी। यह पूरे भारत में सड़क किनारे के होटलों-ढाबों में आसानी से मिल जाती है।

हमारी रोमांचक यात्राओं में से एक थी गंगोत्री से गोमुख तक की यात्रा। यह दूरी २० किलोमीटर की है। हम शाम ३ बजे गंगोत्री से पैदल रवाना हुए। लोगों ने कहा घोड़ा ले लो। हम नहीं माने, सोचा टार्च हमारे पास है, पर थी नहीं। ३ घंटे बाद अंधेरा हो गया। हम पहाड़ों के बीच में थे, अक्टूबर का महीना था। जाना था दक्षिण, चले गये उत्तर, रास्ता भटक गये। रास्ते में नदी थी पार नहीं कर सकते थे। पुल था पर दिखा नहीं। हम १४,००० फीट की ऊँचाई पर थे। हमारी उम्र ५० से ऊपर थी। क्या करें? पत्थरों पर ही सो जाने की सोची और सो गये। साढ़े ६ बजे से साढ़े ८ बजे तक सोये होंगे। बाद में आंख खुली तो वर्षा हो रही थी। सोचा कि अब क्या किया जाए, बरसाती हम पहने हुए थे। शिव नाम का स्मरण करने लगे। हमारा जाप चल ही रहा था की रोशनियाँ नदी के इस पार से व एक उस पार से दिखाई दी। हमने चिल्लाना शुरू किया कि हम यहाँ हैं... वे लोग एक टीम, सियरा क्लब के सदस्य थे जो माउंट भागीरथी पर चढ़ने जा रहे थे। हमें देखकर पूछा कि आप यहाँ इस समय कैसे? हमने कहा कि रास्ता मिल नहीं रहा था तो यहाँ लेटे हैं। उन्होंने हमारी उम्र पूछी और हमने बताई तो कहने लगे आपको पता है आप कितनी ऊँचाई पर हैं? एल्टीट्यूड मीटर निकाला, बताया १४,५०० फीट ऊँचाई पर हैं, कुछ गुणा-भाग करके कहा कि उम्र व ऊँचाई के हिसाब से ऑक्सीजन की आपको कमी हो सकती है। हमें तो नहीं लग रही थी। फिर कहा कि जंगली जानवर आपको मार कर खा सकते थे। हमने सोचा यह भी नहीं हुआ। फिर वो कहने लगे पता है कि एक आस्ट्रेलियन दम्पत्ति एक माह से लापता हैं। पैसे के लालच में आपको आसपास के लोग मार कर खाई में फेंक सकते हैं। हमें खतरे का आभास कराके वे भले लोग पूछने लगे कि आप हमारे साथ चलेंगे? हम तो बहुत खुश हो गये और उनके साथ चल पड़े। दो लोग हमारे पीछे और तीन हमारे आगे टार्च दिखाते चले। इस तरह रात के ११ बजे तक करीब ६ किलोमीटर चलकर भोजवासा पहुँचे। इसी तरह जब हम १९,००० फीट की ऊँचाई पर गोमुख पहुँचे तो वहाँ की सुन्दरता देखकर धन्य हो गये।

हम लोगों ने जम्मू में ४ फीट ऊँचे स्फटिक के शिवलिंग और इससे भी बड़े शिवलिंग खजुराहों में १८ फुट ऊँचे और ४० फीट की गोलाई के देखे। हिमालय के पहाड़ों पर हम लोगों ने करीब ११० किलोमीटर की पैदल यात्रा की।

उन्होंने हमारी उम्र पूछी और हमने बताई तो कहने लगे आपको पता है आप कितनी ऊँचाई पर हैं? एल्टीट्यूड मीटर निकाला, बताया १४,५०० फीट ऊँचाई पर हैं, कुछ गुणा-भाग करके कहा कि उम्र व ऊँचाई के हिसाब से ऑक्सीजन की आपको कमी हो सकती है।

कलकत्ते में मदर टेरेसा का आश्रम देखा और निर्मला शिशु सदन जहाँ नन्हें अनाथ शिशुओं का बड़े सुन्दर ढंग से लालन-पालन होता है। यहाँ से बच्चे गोद भी दिये जाते हैं। इसी तरह देहरादून में चैशायर होम में अपंग बच्चों को घर की तरह रखा जाता है। कार्यकर्ताओं का प्रेम व लगन काबिले तारीफ है। बनारस में आदिवासी बच्चियों के रहने की जगह देखी जहाँ से उनको पढ़ने स्कूलों में भेजा जाता है। रामकृष्ण परमहंस का जन्म स्थान देखा तथा ईश्वरचंद्र विद्यासागर की जन्म स्थली देखी। वह स्कूल देखा जहाँ वे पढ़ाते थे। पुरूलिया में आदिवासियों के घर देखे। गांव देखे जो भारत में सफाई की एक मिसाल हैं। अयोध्या में राम जन्मभूमि देखी जो सिपाहियों से घिरी हुई थी। मथुरा में कृष्ण जन्म स्थली और काशी विश्वनाथ बनारस में देखे। उज्जैन में महाकालेश्वर में भीड़ बहुत थी पर उपेक्षा के चिन्ह सब तीर्थस्थानों व ऐतिहासिक स्थलों की तरह यहाँ भी पाये।

भारत में आधुनिकता देखी जो नग्न है और गरीबी भी देखी जो उसके ही जैसी नग्न सत्य है। एक अपनी ललक में दूसरी अपनी मजबूरी में... पर क्या दोनों एक ही हैं? आशा की किरण देखी, विकास, शिक्षा, बदलाव के रूप में कहीं-कहीं, तो मजबूरी के आंसू भी देखे निराशा, अंधविश्वास, अन्याय के रूप में, जहाँ किसी के पास समस्याओं का हल नहीं है। सफाई के प्रयास देखे तो गन्दगी भी इतनी देखी कि आदमी सांस लेने से ही बीमार हो जाए।

प्रकृति की गोद में, जो भारत की सम्पदा है, आज भी बड़ा सुख मिलता है। आदमी कितना बड़ा ही क्यों न हो इन बड़े-बड़े ऊँचें पर्वतों को देखकर अदना ही लगता है। हिम आच्छादित चोटियाँ और लहरें लेता सागर जो कन्याकुमार के छोर को धो रहा है, रोमांच पैदा करता है। माउंट आबू में दिलवाड़ा के जैन मंदिर मानव कलाकृति का अद्‌भुत नमूना है।

हवा से बिजली बनती हुई तमिलनाडु में, लहलहाते खेत पंजाब में तथा उत्तरप्रदेश और हरियाणा में जहाँ की कल्चर ही एग्रीकल्चर है। पर्वतों पर मोड़-मोड़ पर झरने देखे जैसे शिवजी की जटाओं से गंगा बह रही हो। हरिद्धार में गंगा जी की आरती देखी।

एक ओर देश भक्त देखे जो गांवों में सफाई के लिए टट्टियाँ-शौचालय बनवा रहे हैं, महज ३८४ रूपयों में दूसरी तरफ उड़ीसा में तबाह हुए लोगों के पास आदमी का लालच मदद की इकट्ठी की हुई चीजों को भी नहीं पहुँचने दे रहा था। वहाँ एक पक्का घर बनाने की कीमत सिर्फ १२००० रूपये होती है और कच्चा घर बनाना हो तो ६००० रूपये लगते हैं। लेकिन बाढ़ के पानी के साथ खेतों में नमक आकर इकट्ठा हो जाने के कारण खेती नष्ट हो गई थी। और राहत कार्य सरकार तथा प्राइवेट संस्थाओं के द्वारा जारी था। आदिवासी कहे जाने वाले और कच्चे घर बनाकर गांवों में रहने वाले भोले-भाले लोगों से शहर के लोग सफाई ही सीख लें तो देश का उद्धार हो जाए।

पूरे हिंदुस्तान में गन्दगी फैलाने में रेलों का योगदान उल्लेखनीय है। रेलवे लाइन के किनारे तथा स्टेशनों पर गन्दगी का आलम सहज ही दिखाई दे जाता है। अगर रेलवे प्रशासन चाहे तो महज ५०० रुपये प्रति डिब्बे के हिसाब से हरेक डिब्बे में टेंक लगवाए जा सकते हैं जिससे गन्दगी न फैले, लेकिन सुनता कौन है।

भारत में सड़कों के उपयोग पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है, कुछ उल्लेखनीय बातों पर गौर करें। भारत में सड़क सबसे बड़ा कूड़ा घर है, पीक-दान है, गायों का बाड़ा है, बच्चों के खेलने की जगह हैं, लड़कों के खड़े होने की जगह है। हॉकरों की दुकान, धान पीसने का स्थान, कपड़े फैलाने की जगह, मुर्गी लड़ाने की जगह है। अगर इन सबसे कुछ जगह बचे तो वाहनों को लाया ले जाया जा सकता है। सड़कों पर रोड़े व गति अवरोधक ज्यादा हैं एवं सहूलियतें कम हैं। आप चाहें तो अपनी दुकान को सड़क की आधी चौड़ाई तक आगे बढ़ाकर लगा सकते हैं। पुलिस की जेब गर्म कर सकें तो आप कुछ भी कर सकते हैं। पूजा-पाठ के नाम पर या शादी-समारोह के अवसर पर सड़कों को बन्द किया जा सकता है।

यह तो हुई सड़कों की निराशाजनक तस्वीर, अब उजली बातें भी पढ़िये। भारत की प्राचीन कारीगरी देखी तो दूसरी तरफ नये-नये कारखाने भी जो इतने आधुनिक हैं कि विदेशी भी मात खा जाएं। गुलाबपुरा में सिन्थेटिक सिल्क मिल और सोनगढ़ में कागज की मिल देखी।

सच्चे देशभक्तों से मिलने का अवसर भी मिला। बंगलौर में श्री कृष्णमूर्ति गरीब बच्चों के लिए विवेकानन्द स्कूल नाम से संस्था चला रहे हैं। इसी तरह दिल्ली में श्री सुब्बाराव जी जिन्होंने डाकुओं से आत्म समर्पण करवाया था। ७६ साल की उम्र में भी गाँधी जी के पद चिन्हों पर चलकर, मुश्किलें सहकर बच्चों के लिए शिक्षाप्रद्र कैम्प लगाते हैं। दासपुर में नारायण भाई व उनकी पत्नी सौमित्री गांवों में शिक्षा, चेतना और खुशहाली के लिए बहुत से लोगों का उपकार कर रहे हैं।

अगर आप भारत के सुनियोजित मंदिरों के दर्शन करके शान्ति चाहते हैं तो मिलिट्री के मंदिर देखिये। वे चाहे मेरठ, बड़ौदा में हों या फैजाबाद में, हरेक जगह सफाई और अनुशासन मिलेगा। दूसरी तरफ बड़ी प्रसिद्धि वाले मन्दिरों में सफाई की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि पण्डों से इन मन्दिरों को छुड़ाने की। अक्सर ही भारत के विख्यात मंदिरों में प्राचीन तथा ऐतिहासिक मान्यता होने के कारण लोग बहुत श्रद्धा से

सड़कों पर रोड़े व गति अवरोधक ज्यादा हैं एवं सहूलियतें कम हैं। आप चाहें तो अपनी दुकान को सड़क की आधी चौड़ाई तक आगे बढ़ाकर लगा सकते हैं।

तालों में ताल भोपाल ताल बाकी सब तलैया... और इस कहावत का अगला जुमला तब समझ में आया जब हम चित्तौड़गढ़ पहुँचे कि... गढ़ों में गढ़ चित्तौड़ गढ़ बाकी सब गढ़ैया।

दूर-दूर से वहां पहुँचते हैं और जीवन में पहली और शायद आखिरी बार वहां के व्यवहार से शायद ही कोई खुश होकर लौटते हों। ये मन्दिर न होकर दुकानें हैं जहां जितना पैसा लगाइये उतने दर्शन और प्रसाद पाइये।

भरतपुर में पक्षियों का क्रीड़ा स्थल देखने का एक और आयाम था हमारे भारत दर्शन का। बहुत ही अद्भुत व प्यारी जगह है यह। जहां एशिया भर की चिड़ियां देखने को मिल सकती हैं। हमारे भाग्य से फिर छींका टूटा कि हमें समय से पहले ही, १७ अक्टूबर को उस सफेद हंस के जोड़े के दर्शन हुए जो कि साइबेरिया से आता है। यहाँ का पूरा वातावरण शान्त और खूबसूरत है।

आगरा में यदि बारिश हो जाए तो कभी बाहर नहीं जाना। पानी की निकासी का सही प्रबन्ध नहीं होने के कारण दूसरे कई शहरों की तरह यहां भी पानी सड़कों पर भर जाता है। अपनी यात्रा के दौरान हमने करीब १०-१५ बांध भी देखे। विजयवाड़ा देखा जो बहुत ही सुन्दर है। कन्याकुमारी में विवेकानन्द चट्टान पर खड़े होकर भारत भूमि देखने का अपना ही आनन्द है। सूर्य बंगाल की खाड़ी में उगता हुआ और अरब सागर में डूबता हुआ देखा। माउंट आबू में एक सूर्यास्त स्थल है जो बहुत खूबसूरत दिखता है। पर्वतों की रानी मंसूरी बहुत खूबसूरत है। शिमला की सुन्दरता उससे बिल्कुल अलग है। भारत की सबसे बड़ी रोपवे ट्राली परवाणु के पास टिम्बर ट्रेल में है।

अगर भारत में कुछ बेचने की गारंटी चाहते हों तो अमेरिकन नाम रख दीजिये। खाने में चाइनीज या पीजा, फिर कुछ भी बनाइये बिक जायेगा। ऐसे स्टोर देखे जो लोगों ने बताये कि अमेरिका के सबसे बड़े डिपार्टमेंट स्टोर हैं। जिनका अमेरिका में नामोनिशान नहीं है। मैगी भारत के युवा वर्ग का सबसे ज्यादा प्रिय भोजन बनता जा रहा है। ऐसे बच्चे देखे जो माता पिता की कृपा से चाकलेट केक का ही नाश्ता करते हैं। फलों के रस, कोकाकोला और पेप्सी से सस्ते हैं पर उसकी किसको फिक्र है? लोग खूब पैसे खर्च करके कम्प्यूटर प्रोग्राम सीख रहे हैं पर उनसे क्या करेंगे यह कोई नहीं सोच रहा है। बस अमेरिका या इंग्लैण्ड में नौकरी मिल जाएगी तो ठीक है। भारत में उसका क्या उपयोग है यह हम क्यों सोचें? हम तो सोचते हैं, भारत बहुत देखा फिर भी कम देखा।

अन्त में कुछ भावभीनी यादें- अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में ४०० वर्ष पुराना एक पेड़ देखा और तालाब में बड़ी-बड़ी मछलियां देखीं। सफाई इतनी कि फर्श में अपनी शक्ल भी दिख जाए।

गोआ के चर्च में संट एक्जेवियर का शरीर देखा जो कांच के बक्से में ऐसे ही रखा है जैसे ४०० साल पहले रखा था। पूर्व का बेसिलिका एक चर्च देखा मेरठ के पास सरधना में जो कि बहुत भव्य था। भोपाल में दुनिया की सबसे बड़ी मस्जिद देखी और उत्साह से 'मेरा भोपाल देखें साहब' कहकर दिखाने वाला भी बादशाह (स्कूटर चालक) था। वहां की बहुत बड़ी झील देखी तो बादशाह ने बताया तालों में ताल भोपाल ताल बाकी सब तलैया... और इस कहावत का अगला जुमला तब समझ में आया जब हम चित्तौड़गढ़ पहुँचे कि... गढ़ों में गढ़ चित्तौड़ गढ़ बाकी सब गढ़ैया।

प्रयागराज में पाताल मन्दिर देखा। वहां एक रिक्शा वाला हमारे साथ एक घंटे तक हमारी मंजिल ढूँढता रहा। हमारे यह कहने पर कि वह अब चला जाए क्योंकि हमारे परिचित हम लेने आ रहे हैं, हमने उन्हें फोन कर दिया है। वह बोला कि मुझे पैसों का लालच नहीं है, आपको घर पहुँचा कर ही जाऊंगा। राजस्थान में सड़क पर सुनसान में हमारी गाड़ी खराब हो गयी। एक किसान औरत ने ट्रक रुकवाकर हमें पानी, पेट्रोल दिलवाया और हमारी मदद के लिए वह तब तक वहीं रही जब तक हम वहां से चल न दिये।

दीपावली हमने मेरठ में कुष्ठ आश्रम में आश्रमवासियों के साथ मनाई। उनका उत्साह और रहन-सहन का सलीका व सफाई देखने के काबिल थी। दिसम्बर ३१ और जनवरी १ को हमने मेरठ में सड़क पर सीधे-सादे मेहनती लोगों को हाथ जोड़कर नये साल की बधाई दी थी और अपने कपड़े अर्पित किये। त्रिवेन्द्रम में हमारा स्कूटर चालक जो हमें दर्शनीय स्थान दिखा रहा था। भाषा न जानने के बावजूद सब ठीक-ठाक चल रहा था। हमने उसे हम दोनों की एक फोटो विधानसभा के ठीक सामने लेने की याचना की। वह शरमाकर मुस्कुराया और जेब से कंघा निकाल बाल संवार कर आ खड़ा हुआ, याद आने पर बरबस मुस्कुराहट आ जाती है। उसकी फोटो खींची और उससे लिये पते पर भेजी। सोचता हूँ आज भी मेरे देश के भोले-भाले सोने जैसे तपे हुए कर्मठ लोगों में ईमानदारी जिंदा है।